श्री शांतिनाथ जिन पूजन

रचयिता - कविवर वृन्दावनदासजी कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(मत्तगयन्द)

या भव कानन में चतुरानन, पाप पनानन घेरी हमेरी।
आतम जानन मानन ठानन, बान न होन दई सठ मेरी।।
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आनन टेरी।
आन गही शरनागत को, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

हिमगिरि गतगंगा, धार अभंगा, प्रासुक संगा, भरि भृंगा।
जर-जनम-मृतंगा, नाशि अघंगा, पूजि पदंगा मृदु हिंगा।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

वर बावन चन्दन, कदली नन्दन, घन आनन्दन सहित घसौं।
भवताप निकन्दन, ऐरानन्दन, वंदि अमंदन, चरन बसौं।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

(त्रिभंगी)

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्जत अच्छत जज्जत, भरि थारी।
दुखदारिद गज्जत, सदपद सज्जत, भवभय भज्जत, अतिभारी।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

मंदार, सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं।
भरि कंचनथारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

पकवान नवीने, पावन कीने षटरस भीने, सुखदाई।
मनमोदन हारे, छुधा विदारे, आगे धारे गुनगाई।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यं नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रमतम नाशे, ज्ञेय विकासे सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातें धारा, मोह निवारा, निज भासे।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

चन्दन करपूरं करि वर चूरं, पावक भूरं माहि जुरं।
तसु धूम उड़ावे, नाचत जावे, अलि गुंजावे मधुर सुरं।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक भूरं ले आयो।
ता सों पद जज्जौं,शिवफल सज्जौं, निजरस रज्जौं उमगायो।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(त्रिभंगी)

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी, दृग-प्यारी।
तुम हो भव तारी, करुनाधारी, या तें थारी शरनारी।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सुन्दरी तथा द्रुतविलम्बित)

असित सातँय भादव जानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये।
सचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करें इत ये पद अर्चनं।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज-साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजिहों अबै।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चौदशि जेठ सुहावनी, धरम हेत जजौं गुन पावनी।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

पंचकल्याणक अर्घ्य

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(सोरठा)

असित चौदशि जेठ हने अरी, गिरि समेदथकी शिव-तिय वरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आय के, हम जजैं इत मस्तक नाय के।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(रथोंधत्ता तथा चंद्रवर्त्म)

शान्ति शान्तिगुन मंडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा।
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा, पूजिहौं कलषु हंडिते सदा।।
मोच्छ हेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्न माल हो।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरौं, ध्यावते तुरत मुक्ति-तिय वरौं।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज, भवसागर में अद्भुत जहाज।
तुम तजि सरवारथसिद्धि थान, सरवारथजुत गजपुर महान।।

तित जनम लियो आनन्द धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार।
इन्द्रानी जाय प्रसूति थान, तुम को कर में ले हरष मान।।

हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार।
गिरिराज जाय तित शिला पांडु, ता पे थाप्यो अभिषेक माँड।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

तेत पंचम उदधि तनों सु वारि, सुर कर कर करि ल्याये उदार।
तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द, तुम सिर धारा ढारयो समुन्द।।

अघ घघ धुनि होत घोर, भभभभ भभ धध धध कलश शोर।
द्दमद्दम द्दमद्दम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नूपुरंग।।

तन नन नन नन नन तनन तान, घन नन नन घंटा करत ध्वान।
ताथेई थेई थेई थेई सुचाल, जुत नाचत नावत तुमहिं भाल।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

चट चट चट अटपट नटत नाट, झट झट झट हट नट थट विराट।
इमि नाचत राचत भगति रंग, सुर लेत जहाँ आनन्द संग।।

इत्यादि अतुल मंगल सु ठाठ, तित बन्यो जहाँ सुर गिरि विराट।
पुनि करि नियोग पितुसदन आय, हरि सौंप्यो तुम तित वृद्ध थाय।।

पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न, भोग्यो छहखण्ड करि धरम जत्न।
पुनि तप धरि केवल रिद्धि पाय, भवि जीवनि को शिवमग बताय।।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(पद्धरि)

शिवपुर पहुंचे तुम हे जिनेश, गुण-मंडित अतुल अनन्त भेष।
मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय, हमरी भवबाधा हर जिनाय।।

सेवक अपनो निज जान जान, करुणा करि भौभय भान भान।
यह विघन मूल तरु खंड खंड, चितचिन्तित आनन्द मंड मंड।।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(घत्तानन्द)

श्रीशान्ति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनंता, भगवंता।
भव भ्रमन हनन्ता, सौख्य अनन्ता, दातारं, तारनवन्ता।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(रूपक)

शान्तिनाथ जिन के पदपंकज, जो भवि पूजें मन वच काय।
जनम जनम के पातक ता के, ततछिन तजि के जायं पलाय।।
मनवांछित सुख पावे सो नर, बांचे भगतिभाव अति लाय।
ता तें वृन्दावन नित वंदे, जा तें शिवपुरराज कराय।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha